विषय-सूची

द्विक-निपात (११-१५)

३. तृतीय पंचाशतक

(११) १. आशा दुस्त्याज्य वर्ग - - - - - - - - - - - - ९१
(१२) २. कामना वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ९३
(१३) ३. दान वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ९७
(१४) ४. सत्कार वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ९९
(१५) ५. समापत्ति वर्ग - - - - - - - - - - - - - १००
१. क्रोध पर्याय - - - - - - - - - - - - - - - १०१
२. अकुशल पर्याय - - - - - - - - - - - - - - १०४
३. विनय पर्याय - - - - - - - - - - - - - - - १०४
४. राग पर्याय - - - - - - - - - - - - - - - - १०६

३. तृतीय पंचाशतक

(११) १. आशा दुस्त्याज्य वर्ग

११९. "भिक्षुओ, ये दो आशाएं (इच्छाएं) दुस्त्याज्य हैं।
"कौन-सी दो?
"लाभ की आशा तथा जीवन की आशा।
"भिक्षुओ, ये दो आशायें दुस्त्याज्य हैं।"
१२०. "भिक्षुओ, लोक में ये दो तरह के व्यक्ति दुर्लभ हैं।
"कौन-से दो तरह के?
"पहले उपकार करने वाला तथा कृतज्ञ, कृतवेदी।
"भिक्षुओ, लोक में ये दो तरह के व्यक्ति दुर्लभ हैं।"
१२१. "भिक्षुओ, लोक में ये दो तरह के व्यक्ति दुर्लभ हैं।
"कौन-से दो तरह के?
"तृप्त तथा तृप्त करने वाला।
"भिक्षुओ, लोक में ये दो तरह के व्यक्ति दुर्लभ हैं।"
१२२. "भिक्षुओ, इन दो तरह के व्यक्तियों को तृप्त करना दुष्कर है।
"किन दो तरह के?

"एक तो ऐसे व्यक्ति को जिसे जो-जो मिलता है उसे संचित करता है, दूसरे ऐसे व्यक्ति को जिसे जो-जो मिलता है उसे दूसरों को देता जाता है।

"भिक्षुओ, इन दो तरह के व्यक्तियों को तृप्त करना दुष्कर है।"

१२३. "भिक्षुओ, इन दो तरह के व्यक्तियों को तृप्त करना सहज है।

"किन दो व्यक्तियों को?

"एक तो उस व्यक्ति को जिसे जो-जो मिलता है उसे संचित नहीं करता, दूसरे उस व्यक्ति को जिसे जो-जो मिलता है, उसे दूसरों को देते नहीं रहता।

"भिक्षुओ, इन दो व्यक्तियों को तृप्त करना सहज है।"

१२४. "भिक्षुओ, राग की उत्पत्ति के दो कारण (प्रत्यय) हैं।

"शुभ-निमित्त तथा अयोनिसो-मनसिकार[1] (सही ढंग से चिंतन न करना)।

"भिक्षुओ, राग की उत्पत्ति के ये दो कारण हैं।"

१२५. "भिक्षुओ, द्वेष की उत्पत्ति के दो कारण हैं ।

"कौन-से दो?

"प्रतिघ-निमित्त तथा अयोनिसो-मनसिकार।

"भिक्षुओ, द्वेष की उत्पत्ति के ये दो कारण हैं।"

१२६. "भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टि की उत्पत्ति के दो कारण हैं।

"कौन-से दो?

"दूसरों से अधर्म श्रवण[2] और अयथार्थ चिंतन।

"भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टि की उत्पत्ति के ये दो कारण हैं।"

१२७. "भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि की उत्पत्ति के दो कारण हैं।

"कौन-से दो?

"दूसरों से धर्म श्रवण[3] और योनिसो-मनसिकार (सही ढंग से चिंतन करना)।

---

१ **'अयोनिसो मनसिकारों'** का अर्थ गलत ढंग से चिंतन है, बेढंगा विचार करने से है, अयथार्थ को यथार्थ समझना है। अनित्य को नित्य समझना, दुःख को सुख, अनात्म को आत्मा और अशुभ को शुभ समझना अयोनिसो मनसिकार है। इसके विपरीत चिंतन को योनिसो मनसिकार कहा गया है।

२ पालि में **'परतो च घोसो ति परस्स सन्तिका असद्धम्मसवनं'** का अर्थ दूसरे से अधर्म सुनना।

३ पालि में **'परतो च घोसो ति परस्स सन्तिका सद्धम्मसवनं'** का अर्थ दूसरे से धर्म सुनना।

"भिक्षुओ, सम्यक-दृष्टि की उत्पत्ति के ये दो कारण हैं।"

१२८. भिक्षुओ, ये दो आपत्तियां (दोष)[१] हैं।

"कौन-सी दो?

"हलकी आपत्ति तथा भारी आपत्ति।

"भिक्षुओ, ये दो आपत्तियां हैं।"

१२९. "भिक्षुओ, ये दो आपत्तियां हैं।

"कौन-सी दो?

"संगीन आपत्ति तथा अ-संगीन आपत्ति।

"भिक्षुओ, ये दो आपत्तियां हैं।"

१३०. "भिक्षुओ, ये दो आपत्तियां हैं।

"कौन-सी दो?

"आंशिक (सावशेष) आपत्ति तथा सर्वांगिक (अनवशेष) आपत्ति।

"भिक्षुओ, ये दो आपत्तियां हैं।"

* * * * *

(१२) २. कामना वर्ग

१३१. "भिक्षुओ, श्रद्धालु भिक्षु यदि सम्यक प्रकार से कामना करता है तो उसकी यही कामना होनी चाहिए कि मैं ऐसा होऊं जैसे सारिपुत्त तथा मोग्गल्लान।

"भिक्षुओ, ये ही तुला हैं, ये ही प्रमाण (माप-दंड) हैं मेरे भिक्षु श्रावकोंके लिए जो ये सारिपुत्त तथा मोग्गल्लान हैं।"

१३२. "भिक्षुओ, श्रद्धालु भिक्षुणी यदि सम्यक प्रकार से कामना करे तो उसकी यही कामना होनी चाहिए कि मैं ऐसी होऊं जैसी कि खेमा तथा उप्पलवण्णा भिक्षुणियां।

"भिक्षुओ, ये ही तुला हैं, ये ही प्रमाण हैं मेरी भिक्षुणी श्राविकाओंके लिए जो ये खेमा तथा उप्पलवण्णा भिक्षुणियां हैं।"

१३३. "भिक्षुओ, श्रद्धालु उपासक यदि सम्यक प्रकार से कामना करे तो उसकी यही कामना होनी चाहिए कि मैं ऐसा होऊं जैसे कि चित्त-गृहपति तथा हस्तक आळवक हैं।

---

१ देखें पादटिप्पणी, पृष्ठ २० पर।

"भिक्षुओ, ये ही तुला हैं, ये ही प्रमाण हैं मेरे श्रद्धालु उपासकोंके लिए जो कि ये चित्त-गृहपति तथा हस्तक आळवकहैं।"

१३४. "भिक्षुओ, श्रद्धालु उपासिका यदि सम्यक प्रकार से कामना करे तो उसकी यही कामना होनी चाहिए कि मैं ऐसी होऊं जैसी कि खुज्जुत्तरा तथा वेळुकण्डकिया नन्दमाताउपासिकायें हैं।

"भिक्षुओ, ये ही तुला हैं, ये ही प्रमाण हैं मेरी श्रद्धालु उपासिकाओं के लिए जो कि ये खुज्जुत्तरा उपासिका तथा वेळुकण्डकिया नन्दमाताहैं।"

१३५. "भिक्षुओ, दो धर्मों (बातों) से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान (उच्छिन्नमूल)[१], सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"कौन-से दो से?

"बिना जाने, बिना विचार किये जो अप्रशंसार्ह हैं उनकी प्रशंसा करता है; बिना जाने, बिना विचार किये जो प्रशंसार्ह हैं उनकी निंदा करता है।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त, पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्नहो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।

"कौन-से दो से?

"जानकर, विचारकर अवगुणी के अवगुण कहता है; जानकर, विचारकर गुणी के गुण कहता है।

---

१ पालि में यहां **'अक्खतं'** शब्द है। इसका अनुवाद 'अक्षत रहना', 'बिना (दोष) के होना' किया गया है। उसी तरह **'खतं उपहतं अत्तानं परिहरति'** का भी अनुवाद अवगुणी और सदोष से किया जाता है। वस्तुतः इसका अर्थ होता है – मिथ्या दृष्टि संपन्न हो जीवन बिताता है, अपने जीवन को यापन करता है। किस तरह? जड़ समेत उखाड़े गये वृक्ष के समान, सत्त्वहीन होकर। अट्ठकथा के अनुसार **'खतन्ति गुणानं खतत्ता खतं, उपहतन्ति गुणानं उपहतत्ता उपहतं, छिन्नगुणं, नट्ठगुणन्ति अत्थो'**। रूपक में अनुवाद करना ज्यादा अच्छा होगा।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त, पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।"

१३६. "भिक्षुओ, दो धर्मों से युक्त, मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"कौन-से दो से?

"बिना जाने, बिना विचार किये, अश्रद्धेय-स्थान पर श्रद्धा व्यक्त करता है; बिना जाने, बिना विचार किये श्रद्धेय-स्थान पर अश्रद्धा व्यक्त करता है।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त, मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त, पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।

"कौन-से दो से?

"जानकर, विचार कर अश्रद्धेय-स्थान पर अश्रद्धा व्यक्त करता है; जानकर, विचार कर, श्रद्धेय-स्थान पर श्रद्धा व्यक्त करता है।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त, पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।"

१३७. "भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति मिथ्याचरण करने वाला मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"किन दो के प्रति?

"माता तथा पिता के प्रति।

"भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति मिथ्याचरण करने वाला मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति सम्यक व्यवहार करने वाला, पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।

"किन दो के प्रति?

"माता तथा पिता के प्रति।

"भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति सम्यक व्यवहार करने वाला, पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।

१३८. "भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति अनुचित व्यवहार करने वाला मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"किन दो के प्रति?

"तथागत तथा तथागत-श्रावक के प्रति।

"भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति अनुचित व्यवहार करने वाला मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।

"भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति उचित व्यवहार करने वाला पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ-पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।

"किन दो के प्रति?

"तथागत तथा तथागत-श्रावक के प्रति।

"भिक्षुओ, इन दोनों के प्रति उचित व्यवहार करने वाला पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है

(अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है।"

१३९. "भिक्षुओ, दो धर्म हैं।

"कौन-से दो?

"चित्त की परिशुद्धि तथा लोक के प्रति अनासक्त होना।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

१४०. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।

"कौन-से दो?

"क्रोध तथा शत्रुभाव।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

१४१. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।

"कौन-से दो?

"क्रोध-विनयन (क्रोध को दूर करना) तथा शत्रुभाव-विनयन (शत्रुभाव को दूर करना)।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

* * * * *

(१३) ३. दान वर्ग

१४२. "भिक्षुओ, ये दो दान हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक-दान तथा धर्म-दान। भिक्षुओ, ये दो दान हैं।

"भिक्षुओ, इन दोनों दानों में धर्म-दान ही श्रेष्ठ है।"

१४३. "भिक्षुओ, ये दो यज्ञ हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक-यज्ञ तथा धर्म-यज्ञ।

"भिक्षुओ, ये दो... धर्म-यज्ञ ही श्रेष्ठ है।"

१४४. "भिक्षुओ, ये दो त्याग हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक-त्याग तथा धार्मिक-त्याग (धर्म के लिए त्याग)।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-त्याग ही श्रेष्ठ है।"

१४५. "भिक्षुओ, ये दो परित्याग हैं।
"कौन-से दो?
"भौतिक-परित्याग तथा धार्मिक-परित्याग (धर्म के लिए परित्याग)।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-परित्याग ही श्रेष्ठ है।"
१४६. "भिक्षुओ, ये दो भोग हैं।
"कौन-से दो?
"भौतिक-भोग तथा धार्मिक-भोग।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-भोग ही श्रेष्ठ है।"
१४७. "भिक्षुओ, ये दो संभोग हैं।
कौन-से दो?
"भौतिक-संभोग तथा धार्मिक-संभोग।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-संभोग ही श्रेष्ठ है।"
१४८. "भिक्षुओ, ये दो संविभाग (दान) हैं।
"कौन-से दो?
"भौतिक-दान तथा धार्मिक-दान।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-दान ही श्रेष्ठ है।"
१४९. "भिक्षुओ, ये दो संग्रह हैं।
"कौन-से दो?
"भौतिक-संग्रह तथा धार्मिक-संग्रह।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-संग्रह ही श्रेष्ठ है।"
१५०. "भिक्षुओ, ये दो अनुग्रह हैं।
"कौन-से दो?
"भौतिक-अनुग्रह तथा धार्मिक-अनुग्रह।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-अनुग्रह ही श्रेष्ठ है।"
१५१. "भिक्षुओ, ये दो अनुकंपायें हैं।
"कौन-सी दो?
"भौतिक-अनुकंपातथा धार्मिक-अनुकंपा।
"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-अनुकंपाही श्रेष्ठ है।"

* * * * *

(१४) ४. सत्कार वर्ग

१५२. "भिक्षुओ, ये दो सत्कार हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक-सत्कारतथा धार्मिक-सत्कार।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-सत्कारही श्रेष्ठ है।"

१५३. "भिक्षुओ, ये दो प्रतिसत्कार हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक-प्रतिसत्कारतथा धार्मिक-प्रतिसत्कार।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-प्रतिसत्कारही श्रेष्ठ है।"

१५४. "भिक्षुओ, ये दो एषणायें हैं।

"कौन-सी दो?

"भौतिक-एषणा तथा धार्मिक-एषणा।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक एषणा ही श्रेष्ठ है।"

१५५. "भिक्षुओ, ये दो पर्येषणायें हैं।

"कौन-सी दो?

"भौतिक-पर्येषणा तथा धार्मिक-पर्येषणा।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-पर्येषणा ही श्रेष्ठ है।"

१५६. "भिक्षुओ, ये दो पर्येष्टियां (खोज) हैं।

"कौन-सी दो?

"भौतिक-पर्येष्टि तथा धार्मिक-पर्येष्टि।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-पर्येष्टि ही श्रेष्ठ है।"

१५७. "भिक्षुओ, ये दो प्रकार की पूजायें हैं।

"कौन-सी दो प्रकार की?

"भौतिक-पूजा तथा धार्मिक-पूजा।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-पूजा ही श्रेष्ठ है।"

१५८. "भिक्षुओ, ये दो प्रकार के आतिथ्यहैं।

"कौन-से दो प्रकार के?

"भौतिक-आतिथ्य तथा धार्मिक-आतिथ्य।

---

१ पालि शब्द **'सन्थारो'** का अर्थ 'सत्कार' 'मैत्रीपूर्ण स्वागत' और 'प्रतिछादन' भी होता है। यहां जो संदर्भ है इसमें इसका अर्थ 'मैत्रीपूर्ण स्वागत' या सत्कार है।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-आतिथ्य ही श्रेष्ठ है।"

१५९. "भिक्षुओ, ये दो ऋद्धियां हैं।

"कौन-सी दो?

"भौतिक-ऋद्धितथा धार्मिक-ऋद्धि।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-ऋद्धिही श्रेष्ठ है।"

१६०. "भिक्षुओ, ये दो वृद्धियां हैं।

"कौन-सी दो?

"भौतिक-वृद्धि तथा धार्मिक-वृद्धि।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक-वृद्धि ही श्रेष्ठ है।"

१६१. "भिक्षुओ, ये दो प्रकार के रत्न हैं।

"कौन-से दो प्रकार के?

"भौतिक-रत्न तथा धर्म-रत्न।

"भिक्षुओ, ये दो... धर्म-रत्न ही श्रेष्ठ है।"

१६२. "भिक्षुओ, ये दो संग्रह हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक-संग्रह तथा धार्मिक-संग्रह।

"भिक्षुओ, ये दो... धार्मिक संग्रह ही श्रेष्ठ है।"

१६३. "भिक्षुओ, ये दो वैपुल्य (विपुलतायें) हैं।

"कौन-से दो?

"भौतिक वैपुल्य तथा धर्म वैपुल्य।

"भिक्षुओ, ये दो... धर्म वैपुल्य ही श्रेष्ठ है।"

* * * * *

(१५) ५. समापत्ति वर्ग

१६४. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।

"कौन-से दो?

"ध्यान (समापत्ति) में बैठने की कुशलता तथा ध्यान से उठने की कुशलता।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

(आगे इसी क्रम से है।)

१६५. "ऋजुता तथा मृदुता।"

१६६. "क्षान्ति तथा विनम्रता।"

१६७. "प्रियवाणी तथा प्रतिसत्कार।"

१६८. "अविहिंसा तथा शुचिता।"

१६९. "इंद्रियों का अरक्षण तथा भोजन में मात्रज्ञ न होना।"

१७०. "इंद्रियों का संरक्षण तथा भोजन में मात्रज्ञ होना।"

१७१. "प्रतिसंख्यान (प्रत्यवेक्षण)-बल तथा भावना-बल।"

१७२. "स्मृति-बल तथा समाधि-बल।"

१७३. "शमथ तथा विपश्यना।"

१७४. "शील-दोष तथा दृष्टि-दोष।"

१७५. "शील-संपत्ति तथा दृष्टि-संपत्ति।"

१७६. "शील-विशुद्धि तथा दृष्टि-विशुद्धि।"

१७७. "दृष्टि-विशुद्धि तथा यथा-दर्शन प्रयत्न।"

१७८. "बहुत कुशल-धर्म करने पर भी संतुष्ट न होना (न अघाना) तथा बिना पीछे हटे प्रयत्नशील बने रहना।"

१७९. "विस्मृति तथा असंप्रज्ञान।"

१८०. "स्मृति तथा संप्रज्ञान।"

* * * * *

१. क्रोध पर्याय

१८१. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।

"कौन-से दो?

"क्रोध तथा उपनाह (शत्रुभाव)।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।

[इसी प्रकार आगे भी।]

"म्रक्ष (दूसरे के गुण का अवमूल्यन करना) तथा प्रदास (परिदाह, किसी की उन्नति देख जलना)।

"ईर्ष्या तथा मात्सर्य।

"माया तथा शठता।

"निर्लज्जता तथा पापभीरु न होना।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

१८२. "अक्रोध तथा अनुपनाह।

"अम्रक्ष तथा अप्रदास।

"अनीर्ष्या तथा अमात्सर्य।

"अमाया तथा अशठता।

"लज्जा तथा पापभीरुता।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

१८३. "भिक्षुओ, दो धर्मों से युक्त होने पर कोई (व्यक्ति) दुःख भोगता है।

"किन दो से?

"क्रोध से तथा उपनाह से।

"म्रक्ष से तथा प्रदास से।

"ईर्ष्या से तथा मात्सर्य से।

"माया से तथा शठता से।

"निर्लज्जता से तथा अ-पापभीरुता से।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त होने पर कोई (व्यक्ति) दुःख भोगता है।"

१८४. "भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त होने पर कोई (व्यक्ति) सुख भोगता है।

"कौन-से दो धर्मों से?

"अक्रोध तथा अनुपनाह से।

"अम्रक्ष तथा अप्रदास से।

"अनीर्ष्या तथा अमात्सर्य से।

"अमाया तथा अशठता से।

"लज्जा तथा पापभीरुता से।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त होने पर कोई (व्यक्ति) सुख भोगता है।"

१८५. "भिक्षुओ, ये दो धर्म शैक्ष्य-भिक्षु की हानि के कारण होते हैं।

"कौन-से दो?

"क्रोध तथा उपनाह।

"म्रक्ष तथा प्रदास।

"ईर्ष्या तथा मात्सर्य।

"माया तथा शठता।

"निर्लज्जता तथा अ-पापभीरुता।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म शैक्ष्य-भिक्षु की हानि के कारण होते हैं।"

१८६. "भिक्षुओ, ये दो धर्म शैक्ष्य-भिक्षु की हानि के कारण नहीं होते।

"कौन-से दो?

"अक्रोध तथा अनुपनाह।

"अम्रक्ष तथा अप्रदास।

"अनीर्ष्या तथा अमात्सर्य।

"अमाया तथा अशठता।

"लज्जा तथा पापभीरुता।"

"भिक्षुओ, ये दो धर्म शैक्ष्य-भिक्षु की हानि के कारण नहीं होते।"

१८७. "भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त कोई (व्यक्ति) कर्मानुसार मानो नरक में डाल दिया गया हो।

"किन दो धर्मों से?

"क्रोध से तथा उपनाह से... निर्लज्जता से तथा पापभीरु न होने से।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त कोई (व्यक्ति) कर्मानुसार मानो नरक में डाल दिया गया हो।"

१८८. "भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त कोई (व्यक्ति) कर्मानुसार मानो स्वर्ग में डाल दिया गया हो।

"किन दो धर्मों से?

"अक्रोध तथा अनुपनाह से... लज्जा से तथा पापभीरुता से।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त कोई (व्यक्ति) कर्मानुसार मानो स्वर्ग में डाल दिया गया हो।"

१८९. "भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त कोई व्यक्ति शरीर छूटने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में पैदा होता है।

"किन दो धर्मों से?

"क्रोध से तथा उपनाह से... निर्लज्जता से तथा अ-पापभीरुता से।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से... पैदा होता है।"

१९०. "भिक्षुओ, इन दो धर्मों से युक्त कोई व्यक्ति शरीर के छूटने पर, मरने के बाद, सुगति प्राप्तकर स्वर्गलोकमें उत्पन्न होता है।

"किन दो धर्मों से?

"अक्रोध तथा अनुपनाह से... लज्जा से तथा पापभीरुता से।

"भिक्षुओ, इन दो धर्मों से... उत्पन्न होता है।"

२. अकुशल पर्याय

१९१-२००. "भिक्षुओ, ये दो धर्म अकुशल हैं..."(देखें १८१)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म कुशल हैं..."(देखें १८२)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म सदोष हैं..."(देखें १८१)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म निर्दोष हैं..."(देखें १८२)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म दुःख-कारक हैं..."(देखें १८१)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म सुख-कारक हैं..."(देखें १८२)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म दुःख-फलदायी हैं..."(देखें १८१)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म सुख-फलदायी हैं..."(देखें १८२)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म दुःखद हैं..."(देखें १८१)

"भिक्षुओ, ये दो धर्म सुखद हैं।

"कौन-से दो?

अक्रोध तथा अनुपनाह... अम्रक्ष तथा अप्रदास... अनीर्ष्या तथा अमात्सर्य... अमाया तथा अशठता... लज्जा तथा पापभीरुता।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म सुखद हैं।"

३. विनय पर्याय

२०१. "भिक्षुओ, इन दो बातों का लाभ देख कर तथागत ने श्रावकों के लिए शिक्षा-पदों (नियमों) की प्रज्ञप्ति की है।

"किन दो बातों का?

"संघ की सुष्ठुता के लिए (संतुलन के लिए) तथा संघ की आसानी के लिए... (आसान प्रबंधन के लिए)।

"बड़बोले और अतिउत्साही व्यक्तियों का निग्रह करने के लिए तथा सदाचारी व्यक्तियों के सुखपूर्वक रहने के लिए...।

"इहलौकिक आस्रवों, वैरों, दोषों, भयों तथा अकुशल-धर्मों के संवर के लिए; पारलौकिक आस्रवों, वैरों, दोषों, भयों तथा अकुशल-धर्मों के प्रतिघात के लिए...।

"गृहस्थों पर अनुकंपा करने के लिए तथा पापेच्छ भिक्षुओं के पक्ष का नाश करने के लिए।

"अप्रसन्नों को प्रसन्न करने के लिए, प्रसन्नों को और भी अधिक प्रसन्न करने के लिए...।

"सद्धर्म को स्थित करने के लिए, विनय की रक्षा करने के लिए।

"भिक्षुओ, इन दोनों बातों का ख्याल कर तथागत ने श्रावकों के लिए शिक्षा-पदों (नियमों) की प्रज्ञप्ति की है।"

२०२-२३०. "...प्रातिमोक्ष[1] की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रातिमोक्ष उद्देशों की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रातिमोक्ष-स्थापना की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रवारणा की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रवारणा-स्थापना की प्रज्ञप्ति की है..."

"तर्जनीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"नियस्य-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रव्राजनीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रतिसारणीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"उत्क्षेपणीय-कर्म की प्रज्ञप्तिकी है..."

"परिवास-दान की प्रज्ञप्ति की है..."

"मूल-प्रतिकर्षण की प्रज्ञप्तिकी है..."

"मानत्त-दान की प्रज्ञप्ति की है..."

"अब्भान की प्रज्ञप्ति की है..."

"ओसारणीय की प्रज्ञप्ति की है..."

"निस्सारणीय की प्रज्ञप्ति की है..."

"उपसम्पदा की प्रज्ञप्ति की है..."

"ज्ञप्ति-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"ज्ञप्ति-द्वितीय-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"ज्ञप्ति-चतुर्थ-कर्म की प्रज्ञप्ति की है..."

"अप्रज्ञापित की प्रज्ञप्ति की है..."

---

१ 'विनय पर्याय' में आये सभी पारिभाषिक शब्दों जैसे प्रातिमोक्ष, तर्जनीय कर्म, नियस्य कर्म आदि के बारे में परिशिष्ट देखें।

"प्रज्ञापित की अनुप्रज्ञप्ति की है..."

"सन्मुख-विनय की प्रज्ञप्ति की है..."

"स्मृति-विनय की प्रज्ञप्ति की है..."

"अमूढ़-विनय की प्रज्ञप्ति की है..."

"प्रतिज्ञात-करण की प्रज्ञप्तिकी है..."

"येभूयिसका (बहुमत) की प्रज्ञप्तिकी है..."

"तस्सपापियसिका की प्रज्ञप्ति की है..."

"तृणविस्तारक (दोषों का संक्षेप में निराकरण) की प्रज्ञप्तिकी है..."

"कौन-सी दो के लिए?

"संघ की सुष्ठुता के लिए (संतुलन के लिए) तथा संघ की आसानी के लिए... (आसान प्रबंधन के लिए)।

"बड़बोले और अतिउत्साही व्यक्तियों का निग्रह करने के लिए तथा सदाचारी व्यक्तियों के सुखपूर्वक रहने के लिए...।

"इहलौकिक आस्रवों, वैरों, दोषों, भयों तथा अकुशल-धर्मों के संवर के लिए; पारलौकिक आस्रवों, वैरों, दोषों, भयों तथा अकुशल-धर्मों के प्रतिघात के लिए...।

"गृहस्थों पर अनुकंपा करने के लिए तथा पापेच्छ भिक्षुओं के पक्ष का नाश करने के लिए।

"अप्रसन्नों को प्रसन्न करने के लिए, प्रसन्नों को और भी अधिक प्रसन्न करने के लिए...।

"सद्धर्म को स्थित करने के लिए, विनय की रक्षा करने के लिए।

"भिक्षुओ, इन दोनों बातों का ख्याल कर तथागत ने श्रावकों के लिए शिक्षा-पदों (नियमों) की प्रज्ञप्ति की है।"

४. राग पर्याय

२३१. "भिक्षुओ, राग (के यथार्थ स्वरूप) के अभिज्ञान के लिए दो धर्मों की भावना (अभ्यास) करनी चाहिए।

"कौन-से दो?

"शमथ तथा विपश्यना की।भिक्षुओ, राग के अभिज्ञान के लिए दो धर्मों की भावना करनी चाहिए।

"भिक्षुओ, राग के परिज्ञान के लिए, परिक्षय के लिए, प्रहाण के लिए, क्षय के लिए, व्यय के लिए, विराग के लिए, निरोध के लिए, त्याग के लिए,

प्रतिनिसर्ग के लिए, इन दो धर्मों की भावना करनी चाहिए"... (२३१ अनुसार)।

२३२-२४६. "भिक्षुओ, द्वेष के, मोह के, क्रोध के, उपनाह के, म्रक्ष के, प्रदास के, ईर्ष्या के, मात्सर्य के, माया के, शठता के, हठपने के, सारंभ के, मान के, अतिमान के, मद के, प्रमाद के (यथार्थ स्वरूप के) अभिज्ञान के लिए, परिज्ञान के लिए, परिक्षय के लिए, प्रहाण के लिए, क्षय के लिए, व्यय के लिए, विराग के लिए, निरोध के लिए, त्याग के लिए, प्रतिनिसर्ग के लिए, दो धर्मों की भावना करनी चाहिए।

"कौन-से दो?

"शमथ की तथा विपश्यना की।... इन दो धर्मों की भावना करनी चाहिए।"

ऐसा भगवान ने कहा। प्रसन्न हो भिक्षुओं ने भगवान के कथन का अभिनंदन किया।

द्विक निपात समाप्त।

* * * * *